INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES

IRJMSH

ISSN 2277 – 9809 (online)
ISSN 2348 - 9359 (Print)

An Internationally Indexed Peer Reviewed & Refereed Journal

www.IRJMSH.com
www.isarasolutions.com

Published by iSaRa Solutions

पर्वतीय नगरों में बढ़ता जनदबाव व उसके कारण केस स्टडी बागेश्वर नगरपालिका क्षेत्र

विनीता ⁎[1], डॉ. भगवती नेगी⁎[2], डॉ. मीनाक्षी गोस्वामी⁎[3]

Email ID: vinitayogeshtamta@gmail.com

सारांश

उत्तराखण्ड एक पर्वतीय राज्य है जिसका लगभग 86 प्रतिशत क्षेत्र पर्वतीय व 14 प्रतिशत मैदानी है। नगरीकरण के वर्तमान दौर से यह राज्य भी अछूता नहीं है। इसका अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि निरन्तर राज्य में नगर निकायों की संख्या में बढ़ोत्तरी हो रही है। साथ ही नगरीय जनसंख्या भी तेजी से बढ़ रही है। बागेश्वर जनपद की बागेश्वर नगरपालिका में 1951 से 2018 तक की जनसंख्या का अध्ययन करने पर यह स्पष्ट हुआ कि नगर की जनसंख्या तेजी से बढ़ रही है। जनघनत्व बढ़ रहा है संसाधनों पर दबाव बढ़ने से प्रतिव्यक्ति उपलब्धता कम हो रही है। जिसके लिए आस-पास के ग्रामीण क्षेत्रों से लगातार नगर में हो रहा प्रवास एक मुख्य कारण है। जिस कारण नगर का अनियन्त्रित प्रसार हो रहा है। प्रस्तुत शोध पत्र में छोटे नगरीय केन्द्रों में बढ़ते जनदबाव व उसके कारणों का अध्ययन किया गया है।

1.1 प्रस्तावना

उत्तराखण्ड राज्य की स्थापना के साथ ही यहां तीव्र गति से निर्माण शुरू हुए और आवासीय क्षेत्रों का अनियोजित प्रसार होता गया। लगातार ग्रामीण क्षेत्रों से नगरीय केन्द्रों मे जनसंख्या का पलायन कस्बों को नगर, नगर को महानगर, महानगर को मेगा सिटी मे बदल देता है। उत्तराखणड के सन्दर्भ मे नगरीय केन्द्र निरन्तर बढ़ते जा रहे है जनवरी 2025 मे उत्तराखण्ड मे नगर निगमों की संख्या 11 , नगरपालिकाओ की संख्या 43 और नगर पंचायत की संख्या 46 हो गई है। जिन नगरीय केन्द्रों की जनसंख्या 5 लाख से अधिक है वे नगर निगम, 25000 - 50000 के बीच नगर पालिका व 25000 -11000 तक की जनसंख्या वाले नगर पंचायत बनाई जाती है। उत्तराखणड मे नगर निगम देहरादून, हरिदार, हल्दानी, रूद्रपुर, काशीपुर, रूडकी, ऋषिकेश, कोटदार, श्रीनगर, पिथौरागढ़, अल्मोड़ा है। जनसंख्या के आधार पर नगर निकायों

को तीन श्रेणीयों में बाटां गया है। नगर निकायों में जनसंख्या वहां के भौगोलिक व आधारभूत संरचना से काफी से प्रभावित है।

नगरीकरण के कारण नगरीय जनसंख्या बढ़ती जा रही है। परम्परागत जीवनशैली आधुनिक जीवनशैली मे बदल रही है है ये क्षेत्र शिक्षा, स्वास्थ्य, परिवहन,संचार आदि सुविधाओं से युक्त है जिस कारण समीपवर्ती व दूरस्थ क्षेत्रों से लोग इन केन्द्रों में आकर बस रहे है ग्रामीण क्षेत्रों से नगरीय क्षेत्रो में पलायन 10 किमी से अधिक दूरी से हो रहा है। नगरीय केन्द्रों मे विगत दशकों मे जनसंख्या दबाव बढ़ा है और ग्रमीण क्षेत्र खाली विरान पड़े है युवा व व्यस्क नगरों मे जा के बस रहे है तथा वृद्ध जन गांवो मे अपनी धरोहरो को संजोये हुए है।

1.2 साहित्यिक पुनरावलोकन

बढ़ता नगरीकरण,ग्रामीण क्षेत्रो से नगरीय क्षेत्रों मे हो रहे पलायन नगरों में बढ़ रही जनसंख्या के कारण उत्पन्न हो रही समस्याओं के कारण यह वर्तमान मे शोध का ज्वलन्त विषय बनता जा रहा है क्योंकि यह कई वैश्विक समस्याओं के लिए भी उत्तरदायी है अन्तराष्ट्रीय, राष्ट्रीय व राज्य स्तर पर कई शोध कार्य इस विषय पर किये गये है एस. रै.आई (2011) ने अपने शोध पत्र 'इम्पेक्ट ऑफ पॉपुलेशन ग्रोथ ऑन इन्वारोन्मेन्टल डिग्रेशन केश स्टडी ऑफ इण्डिया' जर्नल ऑफ इकोनोमिक्स एण्ड सस्टेनेबल डिवेलेमेन्ट इस शोध पत्र मे अनियन्त्रित नगरीकरण और औदयोगिकरण के कारण भूमि,वन,जल और ऊर्जा संसाधनो पर पड़ रहे प्रभावो का अध्ययन किया है जनसंख्या वृद्धि के कारण इन संसाधनों की प्रतिव्यक्ति उपलब्धता कम हो जाती है भूमि अवनयन ,मृदा अपरदन के कारण उत्पादकता व आर्थिक पक्ष दोनों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है ग्लोबल वार्मिग, सतही व भूमिगत जल संसाधनो मे कमी,वायु प्रदूषण जैसी पर्यावरण समस्याओं का कारण है।

यू.ए.सच्नैडर,पीटर हैवल्क,इरविन सचमिड, हयूगोलेलिन,एलाइन मोसनियर ,माइकल (2011) ने अपने शोध पत्र 'इम्पेक्ट ऑफ पॉपुलेशन ग्रोथ इकोनोमिक डेवेलमेंट एण्ड टेक्निक्ल चेन्ज ऑन ग्लोबल फूड प्रोडक्सन एण्ड कंजम्पसन' -एग्रीक्ल्चर सिस्टम 104(2), 204-215 2011 इस शोध पत्र मे बताया गया है कि भूमि और जल खाद्यान उत्पादन के लिए दो अत्यन्त आवश्यक संसाधन है ये दो मौलिक संसाधन है परन्तु बढ़ती मानव आबादी,आर्थिक विकास व पर्यावरणीय प्रभावों के कारण दबाव में है बढ़ती जनसंख्या के कारण भोजन की मांग बढ़ रही है वैश्विक रूप में कई उद्देश्य इसके कारण पूर्ण नहीं हो पा रहे है। जैसे कुपोषण मे कमी , गरीबी मे कमी ,स्वस्थ आहार तक बेहतर पहुंच, जल

संसाधनों का उचित प्रबन्धन व आवटन। बढ़ती जनसंख्या ने इसके लिए चुनौती उत्पन्न की है। विनोद मिश्रा (2002) 'पॉपुलेशन ग्रोथ एण्ड इन्टेसिफिकेशन ऑफ लैण्ड यूज इन इण्डिया' इस शोध पत्र में यह अध्ययन किया गया है कि जनसंख्या वृद्धि, कृषि गहनता ,सामाजिक व आर्थिक विकास के बीच अध्ययन में पाया गया कि जनसंख्या वृद्धि के कारण कृषि गहनता अर्थात् कृषि मे अत्यधिक रासायनिक खादों का उपयोग ,कृत्रिम सिंचाई व फसल आवृति बढ़ी है।

ललित बत्रा (2009)ए रीव्यू ऑफ अर्बनाइजेशन एण्ड अर्बन पॉलेसी इन पोस्ट इन्डेपेन्डेट इण्डिया'-इस शोध पत्र मे बताया गया है कि उस समय केवल जनसंख्या 7वॉ हिस्सा ही नगरों में रहता था। ए.. तकीर रहमान, शाहब फजल (2010) 'मॉनिटरींग अर्बन स्प्रावल यूजिंग रीमोट सेंसिग एण्ड जी.आई.एस टेक्निक्स ऑफ ए फास्ट ग्रोईग अर्बन सेन्ट्र्स इण्डिया' इस शोध पत्र में अनियोजित नगरीय प्रसार के बारे में बताया गया है 1961 से नगरीय जनसंख्या बहुत तेजी से बढ़ी है जिसका कारण अच्छे रोजगार की तलाश में ग्रामीण क्षेत्रों से नगरों की ओर पलायन हो रहा है जिसके कारण उत्पाकता, कृषि भूमि, भूमिगत जल,ग्रीन एरिया,सतही जल आदि में कमी आ रही है इसलिए वर्तमान मे नगरीय प्रसार को समझना और उसका मात्राकरण आवश्यक है द. भारत में नगरीय प्रसार का अध्ययन किया गया है नगरीय प्रसार के कारण बिते चार दशकों में पारिस्थितिकी में भी परिवर्तन हुआ है। जी.फिरदौस,ए अहमद(2013)'रिलेशन्शिप बिटवीन हाउसिंग एण्ड हेल्थ ए क्रास -सेक्शन स्टडी ऑफ अर्बन सेन्टर ऑफ इण्डिया' अध्ययन में दिल्ली एन.सी.आर. के तीन नगरों की आवासीय स्थिति व स्वास्थ्य का अध्ययन किया गया है निम्न आवासीय स्थिति स्वास्थ्य को प्रभावित करती है इन क्षेत्रो मे तपेदिक,अस्थमा जैसे मामले पाये गये है नगरीय केन्द्रो मे अधिक जनसंख्या आवासीय स्थिति को निम्न कर देती है।

सी. एम लक्ष्मणा (2013)'पॉपुलेशन, डेवेल्मेन्ट एण्ड इन्वारोन्मेन्ट इन इण्डिया' इस शोधपत्र में बताया गया है कि जनसंख्या वृद्धि और आर्थिक विकास के कारण विकासशील देशों मे पर्यावरणीय अवनयन विकसित देशों की तुलना मे अधिक हुआ है। आर्थिक विकास व आधारभूत संरचना का निरन्तर प्रसार पर्यावरणीय समस्याओं को जन्म दे रहा है। डा.नीलमणी जायसवाल, सुदेश साहा(2014) 'अर्बनाजेशन इन इण्डिया एन इम्पेक्ट असेस्मेन्ट' इस शोध पत्र में अध्ययन किया गया है कि नगरीकरण का आधुनिकरण,औदयोगीकरण और सामाजिक युक्तिकरण की प्रकिया से प्रत्यक्ष सम्बन्ध है मानव समाज अच्छी शिक्षा ,रोजगार अवसर,

यातयात आदि कारणों से शहरों मे आता है जिस कारण शहर अति जनसंख्या के केन्द्र हो गये है जो जैसे प्रतीत होते है वैसे होते नहीं बेतरतीब व अनियोजित अव्यवस्थित होते है इस प्रक्रिया के कारण ग्रामीण संस्कृति नगरीय संस्कृति द्वारा प्रतिस्थापित हो रहे है ।

बी.पाण्डे,के सी (2015)'अर्बनाईजेशन एण्ड एग्रीकल्चर लैण्ड इन इण्डिया-कम्पैयरिंग सैटेलाइट इस्टिमेटस विथ सेंसेस डेटा' इस शोध पत्र में 2001 -2010 तक कृषि भूमि ह्रास पर जनसंख्या वृद्धि के प्रभावों का अध्ययन किया गया है छोटे शहरो मे कृषि भूमि को अधिक नुकसान हुआ है शहरी विस्तार के कारण लगभग प्रत्येक राज्य ने अपना 1% भौगोलिक क्षेत्र खो दिया है। टी.सदाशिवम,शहला तब्स्सु (2016) 'ट्रेडस ऑफ अर्बनाईजेशन इन इण्डिया-इस्यू एण्ड चैलेन्ज इन द 21 वैश्विकरण के कारण मानव ,पूंजी व उत्पादन अधिक तेजी व सरलता से इधर -ऊधर जा सकते है नगरीकरण और औद्योगीकरण दोनो को पृथक नहीं किया जा सकता है 21 वी सदी एक ऐसे दौर मे है जिसमें शहरी आबादी निरन्तर बढ़ती रहेगी और सर्वाधिक आबादी शहरों मे रहेगी।

1.3 विधि तन्त्र

शोध प्रविधि से तात्पर्य शोधकर्ता द्वारा आवश्यक सूचनाओं, आकड़ों व तथ्यों को एकत्रित करने व उनकी व्याख्या,विश्लेषण करने के लिए अपनायी जाने वाले व्यवस्थित तरीको,विधियो व तकनीको से है। शोध प्रविधि द्वारा ही हम विभिनन शोध संबन्धित तथ्यों का अवलोकन व वर्गीकरण करते है साथ ही विश्लेषण हेतु विभिन्न उपकरणों,गणितीय एवं सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग करते है। जनसंख्या सम्बन्धी आकड़े द्वितीयक आकड़े है जो भारतीय जनगणना विभाग दारा जारी आकड़े है जो नगरपालिका बागेश्वर के कार्यालय से लिये गये है। आकड़ों का विश्लेषण सांख्किकीय विधियों से किया गया है। ग्राफ व आरेख माइक्रोसॉफ्ट वर्ड व माइक्रोसॉफ्ट एक्सल से बनाये गये है।

1.4 अध्ययन क्षेत्र

बागेश्वर जनपद उत्तराखण्ड के कुमाऊं मण्डल में स्थित है जो 79°46'0" पूर्वी देशान्तर से 79°46'30" तथा 29°49'30" उत्तरी अक्षांश से 29°51'0" उत्तरी अक्षांश में फैला है। जो अपनी सुन्दर घाटियों के लिए जाना जाता है जो कुमाऊं हिमालय का हिस्सा है। अध्ययन क्षेत्र बागेश्वर नगरपालिका सरयू व गोमती जैसी सतत् वाहिनी नदियों के संगम पर स्थित है। इसे उत्तर के वराणासी के नाम से भी जाना जाता है ऐसा मान्यता है कि शिव व्याघ्र के रूप यहां विचरण करते थे जिस कारण इसे व्याघ्रेश्वर के नाम से भी जाना जाता है पू. में भीलेश्वर पं. में

नीलेश्वर,उ. में सूरजकुण्ड व द. में अग्निकुण्ड के मध्य बागेश्वर नगर स्थित है। 19 वी सदी में बागेश्वर एक छोटी सी बस्ती थी। 1860 में यहां लगभग 200-300 दुकानें थी एटकिन्सन के हिमालय गजेटियर में वर्ष 1886 में यहां की आबादी 500 बतायी गई ।1921 में बद्री दत्त पाण्डे,हरगोन्दि पंत ,श्याम लाल शाह व विक्टर मोहन जोशी के नेतृत्व में कुली बेगार आन्दोलन पवित्र सरयू नदी के तट पर हुआ बागेश्वर नगरपालिका क्षेत्र सरयू व गोमती के संगम में 8.5 वर्ग किमी क्षेत्र में फैला है जिसमें 1991 मे 25 वार्ड थे वर्तमान मे 11 वार्ड है। बागेश्वर नगरपालिका मे वर्ष 2018 में बिलौनासेरा, नारायणदेव, ज्वालादेवी, सैममन्दिर, बागनाथ, ठाकुरदारा, कठायतबाड़ा, मण्डलसेरा उत्तरी,मण्डलसेरा दक्षिणी, मां चण्डिका, वेणीमाधव है।

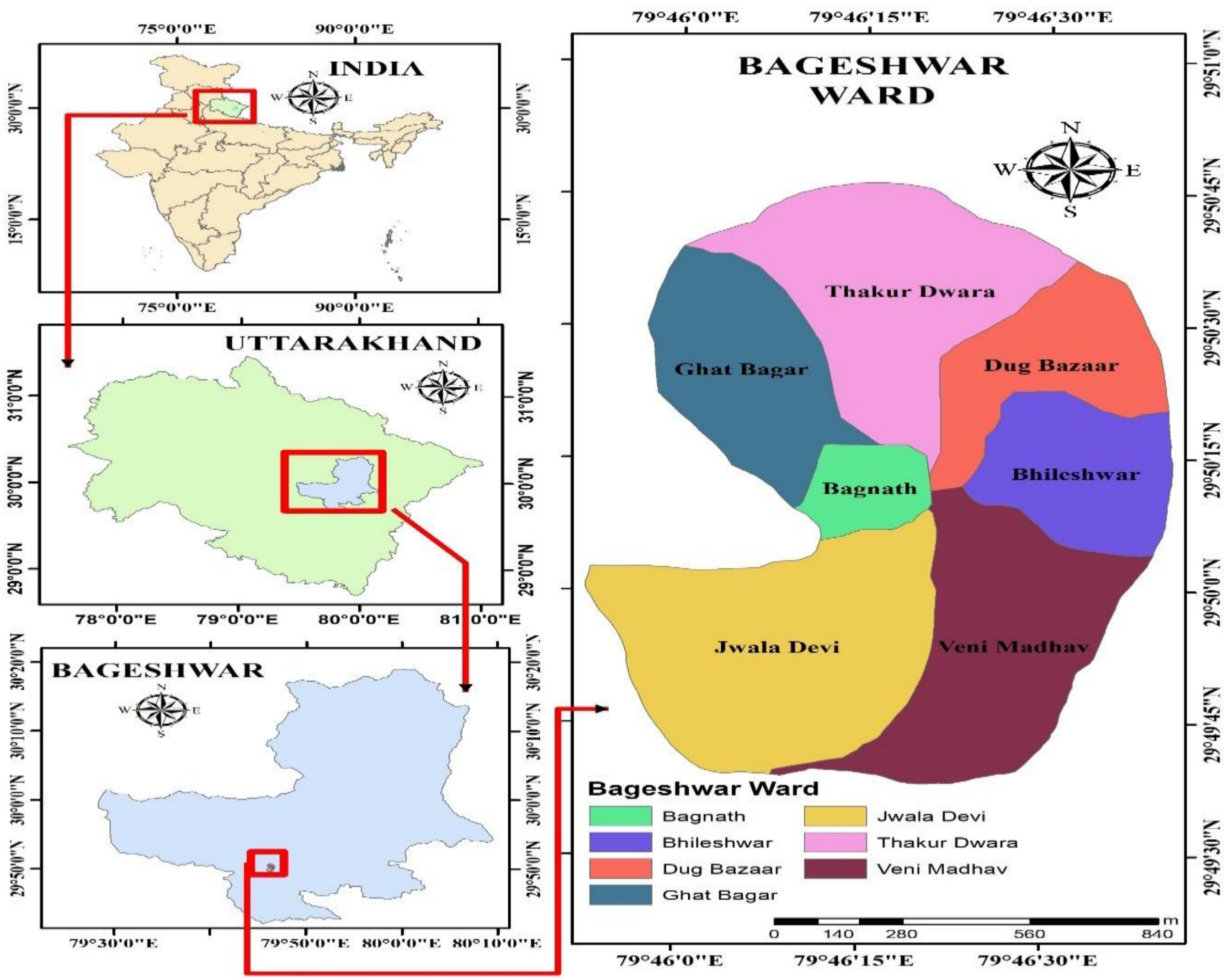

मानचित्र संख्या - 01

1.5 बागेश्वर नगरपालिका क्षेत्र में बढ़ता जनसंख्या दबाव

जनांकिकीय संरचना किसी भी क्षेत्र में मानवीय संसाधन के सामाजिक, आर्थिक व सांस्कृतिक स्वरूप को समझने में सहायक है । किसी देश की कुल कार्य क्षमता व संसाधनों पर दबाव की स्थिति का अनुमान भी जनांकिकीय संरचना से पता चलता है। जनांकिकीय संरचना किसी क्षेत्र में विद्यमान समस्याओं, सम्भावनाओं व विकास को समझने की कुंजी है। इसमें जनसंख्या के भौतिक, सामाजिक व आर्थिक लक्षणों को शामिल किया जाता है। भौतिक लक्षणों में आयु संरचना, लिंगानुपात, प्रजाति, जनघनत्व व सामाजिक लक्षणों मे वैवाहिक स्थिति, शिक्षा, परिवार, प्रवास, साक्षरता, भाषा, धर्म, राष्ट्रीयता तथा जातीय समूह को शामिल किया जाता है। आर्थिक लक्षणों में व्यवसाय, आय,उद्योग आते है।

उत्तराखण्ड में 2001 में जनघनत्व 159 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी.जो 2011 में बढ़कर 189 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी. हो गया। हरिद्वार जनपद का जनघनत्व सर्वाधिक 817 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी. जबकि सबसे कम उत्तरकाशी 41 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी. है बागेश्वर जनपद का जनघनत्व 2001 में 108 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी. जो 2011 में 116 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी. हो गया। नगरीय क्षेत्र में जनघनत्व अधिक है। बागेश्वर नगरपालिका में जनसंख्या लगातार बढ़ती जा रही है।

तालिका 1.1 बागेश्वर नगरपालिका में बढ़ती जनसंख्या का विवरण

क्र.सं	वर्ष	जनसंख्या
1	1951	1740
2	1961	2189
3	1971	4314
4	1981	4368
5	1991	5774
6	2001	7803
7	2011	9091
8	2018	25045

(**स्रोत-**नगरपालिका बागेश्वर विभागीय अभिलेख)

तालिका 1.1 से स्पष्ट है कि बागेश्वर नगरपालिका क्षेत्र में जनसंख्या 1951 से 2018 तक निरन्तर बढ़ रही है 1991 से 2018 तक जनसंख्या में 93 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी हुई।

बागेश्वर नगरपालिका क्षेत्र में विगत वर्षों (1951-2018) में बढ़ती जनसंख्या का विवरण

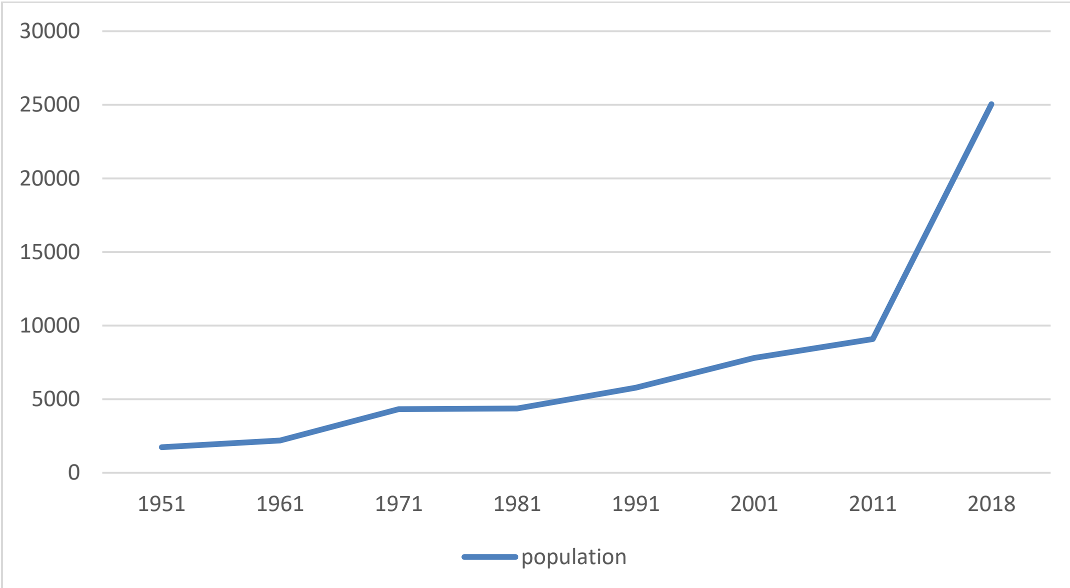

आरेख संख्या -01

तालिका 1.2 -बागेश्वर नगरपालिका क्षेत्र में वार्डवार जनसंख्या का विवरण

क्र.म.	**वार्ड का नाम**	**जनसंख्या 1991**
1	नई बस्ती	257
2	माल रोड	265
3	घटबगड़	261
4	बाल्मीकी वार्ड	226
5	चौरासी	239
6	जामा मस्जिद	260
7	भुरचुनिया	265
8	मिराल गांव	250
9	बनखोला	239
10	दुग बाजार	254
11	मजिया खेत	264

12	भागीरथी	207
13	मल्ली बाजार	201
14	रामभ्रद	199
15	वेणीमाधव	200
16	नुमाईसखेत	209
17	कत्यूर बाजार	264
18	ज्वाला देवी	220
19	भीलेश्वर	201
20	बागनाथ	203
21	नीलेश्वर	259
22	पाण्डेखोला	206
23	प्रकटेश्वर	215
24	गोमती कक्ष	212
25	ठाकुरदारा	203
	कुल	**5774**

(**स्रोत-**नगरपालिका बागेश्वर विभागीय अभिलेख)

तालिका 1.2 से स्पष्ट है कि 1991 में बागेश्वर जनपद में कुल 25 वार्ड थे मालरोड और भुरचुनिया वार्ड की जनसंख्या सर्वाधिक 265 और रामभद्र वार्ड की सबसे कम 199 है। लगभग सभी वार्ड में जनसंख्या का वितरण समान था। इस समय बागेश्वर जनपद अल्मोंड़ा जिले का भाग था जैसे ही बागेश्वर 1997 में अलग जिला बना वैसे ही जनसंख्या का संकेद्रण भी बढ़ने लगा। इसके बाद 2001 व 2011 की जनगणना में नगरपालिका क्षेत्र में जनसंख्या की स्थिति निम्नवत् है।

तालिका 1.3 नगरपालिका क्षेत्र में जनसंख्या का विवरण

	वार्ड	**2001**	**2011**
1	वैनीमाधव	1538	1885
2	भीलेश्वर	633	675
3	दुगबाजार	1530	1271

4	ठाकुरदारा	1012	1167
5	बैजनाथ	673	731
6	घाटबगड़	736	999
7	ज्वालादेवी	1681	2363
		7803	**9091**

(**स्रोत-**नगरपालिका बागेश्वर विभागीय अभिलेख)

तालिका 1.3 दारा स्पष्ट है कि बागेश्वर नगरपालिका क्षेत्र में 1991 में 5774 थी जो 2001 में जनसंख्या 7803 व 2011 में बढ़ कर 9091 हो गयी 1991 से 2011 के मध्य जनसंख्या **में प्रतिशत की वृद्धि** हुई सर्वाधिक जनसंख्या ज्वालादेवी वार्ड की है जो 2001 में 1681 व 2011 में 2363 हो गयी। सबसे कम जनसंख्या भीलेश्वर वार्ड में है जो 2001 में 633 व 2011 में 675 रही।

तालिका 1.4 -बागेश्वर नगरपालिका क्षेत्र में वार्डवार 2018 जनसंख्या का विवरण

क्र. सं	**वार्ड का नाम**	**जनसंख्या**
1	बिलौनासेरा	2342
2	नारायणदेव	1827
3	ज्वालादेवी	1805
4	सैममन्दिर	1892
5	बागनाथ	2403
6	ठाकुरदारा	2483
7	कठायतबाड़ा	2050
8	मण्डलसेरा उत्तरी	2650
9	मण्डलसेरा दक्षिणी	2856
10	मां चण्डिका	2392
11	वेणीमाधव	2345
	कुल	**25045**

(**स्रोत-**नगरपालिका बागेश्वर विभागीय अभिलेख)

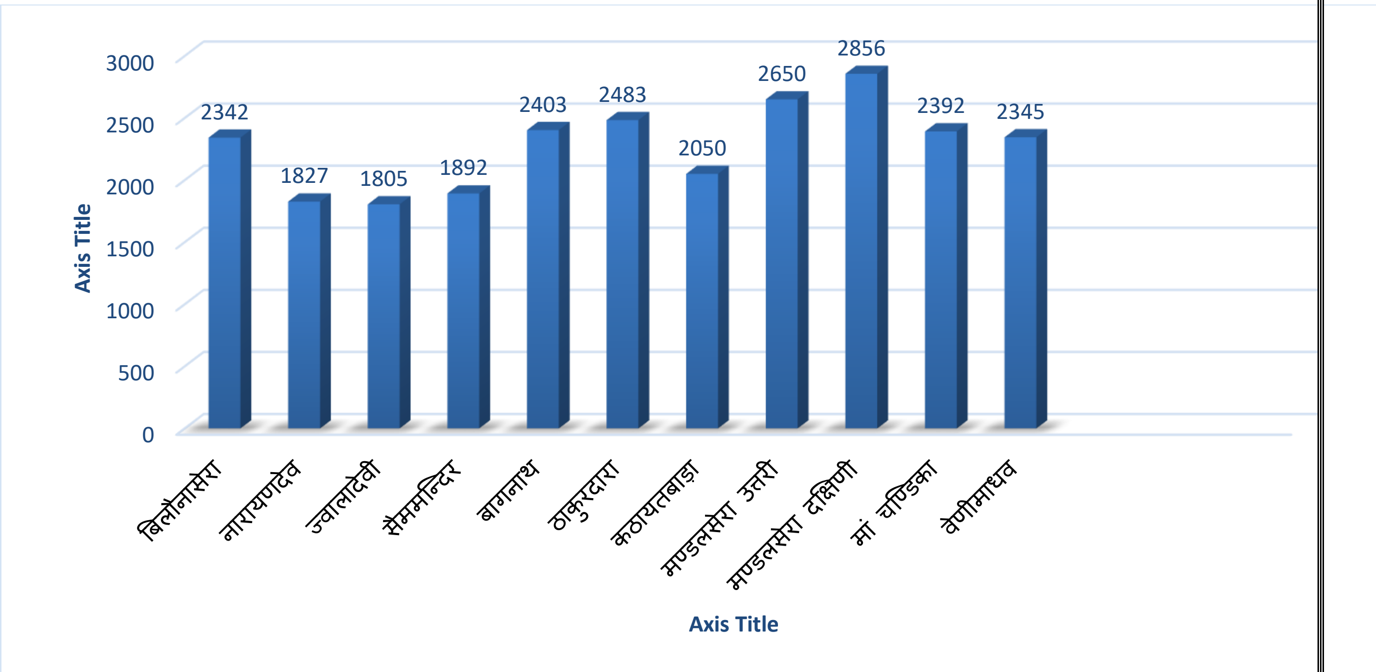

आरेख संख्या -02

तालिका 1.4 से स्पष्ट है कि बागेश्वर नगरपालिका क्षेत्र में 2018 में कुल वार्ड 11 थे और जनसंख्या 25045 हो गयी जिनमें मण्डलसेरा दक्षिणी में जनसंख्या सर्वाधिक 2856 व सबसे कम ज्वालादेवी 1805 थी।

तालिका 1.5- बागेश्वर नगरपालिका क्षेत्र में जनघनत्व का विवरण

क्र.स.	वर्ष	जनसंख्या घनत्व
1	1991	679
2	2001	918
3	2011	1070
4	2018	2946

(**स्रोत-**नगरपालिका बागेश्वर विभागीय अभिलेख)

बागेश्वर नगरपालिका क्षेत्र में जनघनत्व का विवरण

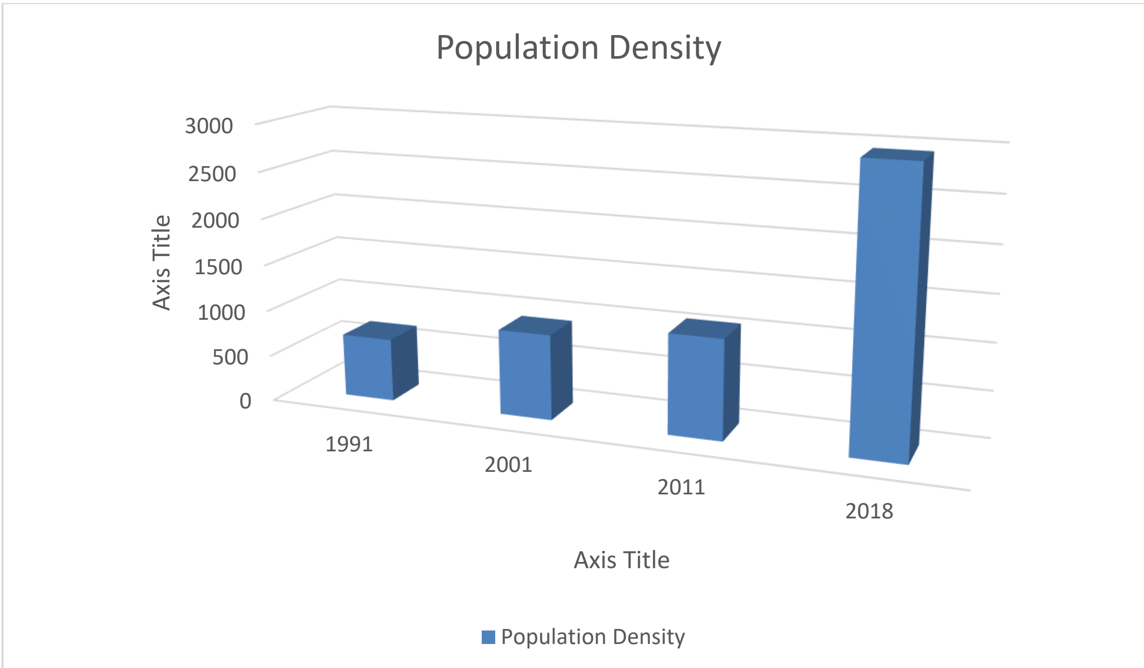

आरेख संख्या -03

1.6 बागेश्वर नगरपालिका क्षेत्र में बढ़ते जनसंख्या दबाव के कारण

किसी भी क्षेत्र में जनसंख्या के बढ़ने के तीन मुख्य कारण बढ़ती जन्म दर, घटती मृत्यु दर व प्रवास । नगरीय क्षेत्र में जनसंख्या के बढ़ने का प्रमुख कारण प्रवास है जो नगर में उपलब्ध आधारभूत सुविधाओं के आकर्षण के कारण हो रहा है। यह प्रवास स्थायी व अस्थायी दोनों तरह का होता है। आस- पास के ग्रामीण क्षेत्रों से नगर में प्रवास इसका प्रमुख कारण है। ग्रामीण क्षेत्रों से शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार अन्य सुविधाओं के कारण लोग नगरीय क्षेत्र में बस रहे है। बागेश्वर नगरपालिका क्षेत्र बागेश्वर जनपद का सबसे बड़ा सेवा केन्द्र है। इस लिए इसके द्वारा सेवित क्षेत्र भी बढ़ा है।अध्ययन में यह पाया गया कि नगर की स्थायी जनसंख्या की अपेक्षा आस-पास के नगरीय क्षेत्रों से आकर बसी जनसंख्या का हिस्सा कई गुना अधिक है नगरीय जनसंख्या के दबाव को बढ़ाने के लिए।

1.7 निष्कर्ष

बागेश्वर जनपद में नगरपालिका क्षेत्र बागेश्वर एक पर्वतीय नगर है जिसमें जनसंख्या का अध्ययन करने पर यह ज्ञात हुआ कि नगर में 1951 से 2018 तक जनदबाव बढ़ता गया

है जो 1740 से 25045 हो गयी है। वर्तमान में इसके लगभग 100000 होने का अनुमान है नगर में बढ़ रही जनसंख्या का मुख्य कारण प्रवास है जो आस-पास के ग्रामीण क्षेत्रों से हो रहा है जिस कारण आस-पास के ग्रामीण क्षेत्र खाली हो रहे है। इस तरह का नगरीय प्रसार संसाधनों और जनसंख्या के बीच असन्तुलन को जन्म दे रहा है। एक ओर ग्रामीण क्षेत्रों में संसाधन व्यर्थ पड़े है वही नगर में संसाधनों की प्रति व्यक्ति उपलब्धता कम हो रही है। इसलिए आवश्यक है कि आस-पास के ग्रामीण क्षेत्रों को सुविधा सम्पन्न बनाया जाए आधारभूत संरचना का विकास किया जाए साथ ही नगर में नियोजित विकास के लिए प्लान बनाया जाए। ताकि सतत् विकास की अवधारणा को साकार किया जा सकें।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- मामोरिया चर्तुभुज(1986): मानव भूगोल, साहित्य भवन पब्लिकेशन।
- सिंह आर.एन व मौर्या एस. डी.: नगरीय भूगोल, शारदा भवन पब्लिकेशन।
- मामोरिया चर्तुभुज व माहेश्वरी दीपक (2001): साहित्य भवन पब्लिकेशन।
- आई.रै.एस (2011): 'इम्पेक्ट ऑफ पॉपुलेशन ग्रोथ ऑन इन्वारोन्मेन्टल डिग्रेशन केश स्टडी ऑफ इण्डिया' जर्नल ऑफ इकोनोमिक्स एण्ड सस्टेनेबल डिवेलेमेन्ट।
- सच्नैडर ए. यू., हैवल्क पीटर, सचमिड इरविन, हयूगोलेलिन, मोसनियर एलाइन ,माइकल (2011) : 'इम्पेक्ट ऑफ पॉपुलेशन ग्रोथ इकोनोमिक डेवेलमेंट एण्ड टेक्निक्ल चेन्ज ऑन ग्लोबल फूड प्रोडक्सन एण्ड कंजम्पसन'।
- मिश्रा विनोद (2002): 'पॉपुलेशन ग्रोथ एण्ड इन्टेसिफिकेशन ऑफ लैण्ड यूज इन इण्डिया'
- रहमान ए. तकीर, फजल शाहब (2010): 'मॉनिटरींग अर्बन स्प्रावल यूजिंग रीमोट सेंसिग एण्ड जी.आई.एस टेक्निक्स ऑफ ए फास्ट ग्रोईग अर्बन सेन्ट्र्स इण्डिया'।
- जायसवाल डा. नीलमणी, साहा सुदेश (2014): 'अर्बनाजेशन इन इण्डिया एन इम्पेक्ट असेस्मेन्ट'।
- सदाशिवम टी.,तब्स्सु शहला (2016): 'ट्रेडस ऑफ अर्बनाईजेशन इन इण्डिया-इस्यू एण्ड चैलेन्ज इन द 21।

ISARA INSTITUTE OF MANAGEMENT & PROFESSIONAL STUDIES

RESEARCH GATEWAY

AROGYAM ONLINE

PARIVARTAN PSYCHOLOGY CENTER

भारतीय भाषा, शिक्षा, साहित्य एवं शोध

ISSN 2321 – 9726

WWW.BHARTIYASHODH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SCIENCE & TECHNOLOGY

ISSN – 2250 – 1959 (0) 2348 – 9367 (P)

WWW.IRJMST.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF COMMERCE, ARTS AND SCIENCE

ISSN 2319 – 9202

WWW.CASIRJ.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES

ISSN 2277 – 9809 (0) 2348 - 9359 (P)

WWW.IRJMSH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF SCIENCE ENGINEERING AND TECHNOLOGY

ISSN 2454-3195 (online)

WWW.RJSET.COM

INTEGRATED RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT, SCIENCE AND INNOVATION

ISSN 2582-5445

WWW.IRJMSI.COM

JOURNAL OF LEGAL STUDIES,POLITICS AND ECONOMICS RESEARCH

WWW.JLPER.COM